रेडियेशन पहेली नहीं, सहेली

प्रिय काजल,

स्नेह! मैं दिलीप अंकल, तुम्हारे पापा का मित्र तुम्हें स्मरण होगी बचपन की वे शामें, जब मेरे ड्यूटी से लौट कर आते ही तुम गणित की पुस्तक लेकर मेरे यहां आ जाती थी और मैं तुम गणित की पहेलियों को सुलझाया करते थे। आज तुम्हारे पापा ने फोन पर बतलाया कि परमाणु बिजली घर में इंजीनियर के पद पर तुम्हारी नियुक्ति का ई–मेल आ गया है, परन्तु तुम रेडियेशन की पहेली में उलझकर अनिर्णय की स्थिति में हो, बचपन की गणित की पहेली के समान ही आज यह ई–मेल/पत्र तुम्हें परमाणु बिजली घर की रेडियेशन की पहेली को सुलझाने के लिए भेज रहा हूँ।

परमाणु बिजली घर के रेडियेशन क्षेत्रों में मैंने कार्य, निरीक्षण, परीक्षण में हजारों मिली रेम (रेडियेशन नापने की एक यूनिट) लिया है। रेडियेशन कार्य क्षेत्र में हम फिल्म बेज एवं डोजीमीटर लेकर सुरक्षा उपकरणों के साथ अनुमत समय सीमा व पूरी तैयारी के साथ कार्य करने जाते थे। जिस प्रकार, तुम्हारे पापा हर तीन महीने में ब्लड शूगर चेक करवाकर रिकार्ड रखते हैं या तुम्हारी मम्मी की हर छह महीने में हीमोग्लोबीन की जांच होती है या तुम्हारी दादी का ब्लड प्रेशर हर महीने नापा जाता है, ठीक उसी प्रकार रेडियेशन क्षेत्र में काम करने पर हमें कितना रेडियेशन मिला यह रिकार्ड बिजली घर का स्वास्थय भौतिकी विभाग रखता थां, हर माह की, हर वर्ष की, 5 वर्ष के ब्लाक की एवं पूरे सेवाकाल के जीवन की अंतर्राष्ट्रीय मापदंडों के अनुसार रेडियेशन डोज की सीमा निर्धारित थी। हर वर्ष मेडिकल चेक अप होता था, पर्यावरण सर्वेक्षण प्रयोगशाला में सम्पूर्ण शरीर की जांच होती थी कि शरीर में हानिकारक रेडियोएक्टिव पदार्थ तो नहीं हैं। ये सब व्यवस्थाऐं आज भी हैं व हमेशा रहेंगी।

कुछ और विस्तार से सरल भाषा में तुम्हें समझाऊं, तो यह भी जान लो एक बार हमारे परिवार के हर सदस्य की मेडिकल जांच हुई थी। हर व्यक्ति को प्रति सप्ताह यूरीन सेम्पल नियम से देना होता थां पर्यावरण सर्वेक्षण प्रयोगशाला भूमि, वायु, जल, खाद्य पदार्थो का निरीक्षण कर रेडियेशन की मात्रा मापती है। परमाणु बिजली घर चिकित्सालय में रेडियेशन रोगी के उपचार के लिए अलग से वार्ड है व रेडियेशन के इलाज के लिए प्रशिक्षित डॉक्टर भी हैं। बिजली घर में आपात्कालीन ड्रिल होती हैं, एवं आस पास के क्षेत्र वासियों की जानकारी हेतु हर दो वर्ष में एक बार ऑफ–साइट एमरजेन्सी ड्रिल भी होती हैं। मुझे स्मरण है कि जब वर्ष 2005 में होने वाली ड्रिल की ट्रेनिंग हेतु मैं आस पास के गांवों में जाता था, तो ग्रामीण मुझे देखकर विश्वास ही नहीं करते थे कि स्वयं इतना अधिक रेडियेशन लेने वाला व्यक्ति भी जब स्वस्थ है, तब बिजली घर से इतनी दूर के गांव में उन्हें रेडियेशन से क्या तकलीफ हो सकती है और मेरी बातचीत से उनके मन का संदेह, भ्रम, शंका, प्रश्न स्वयं ही शांत होते चले जाते थे।

काजल बेटी, दिन में रेडियेशन एरिया में काम करने के पश्चात भी मेंने तुमसे कभी नहीं कहा कि मुझे थकान हो रही है, तुम गणित के प्रश्न हल करने के लिए कल आना। ड्यूटी से लौटते समय भी मैं उतना ही स्वस्थ होता था जितना सुबह ड्यूटी जाते समय । 64 वर्ष की उम्र में भी मैं पूर्ण स्वस्थ हूँ, स्कूलों में एक दो घंटों की वार्ता बिना थके हुए दे देता हूँ। टच वुड, उम्र के इस मोड़ पर भी न मुझे ब्लड प्रेशर की समस्या है, न ही ब्लड शूगर की तकलीफ। 53 बार रक्तदान कर चुका हूँ एवं 65 वर्ष की रक्तदान की सीमा लक्ष्मण रेखा का पालन करते हुए भी मुझे अभी भी रक्तदान के लिए 4 अवसर और हैं।

बेटी, नियंत्रित अग्नि मित्र होती है, इसी प्रकार नियंत्रित रेडियेशन कोई पहेली नहीं, परन्तु एक विश्वास पात्र सहेली है। तुम रेडियेशन की पहेली में मत उलझो, शीघ्र ज्वाइन कर लो एवं एक अच्छी सी पार्टी दो, ताकि मैं भी पार्टी में रसगुल्ले, आईसक्रीम मन भर कर खा कर तृप्त हो सकूं।

मुझे विश्वास है कि अंधेरी राह में मेरा पत्र तुम्हें रोशनी देगां तुम भटकने से बचोगी, सकारात्मक निर्णय लोगी एवं अगले वर्ष बेंक में पेंशन हेतु मेरे जीवित होने के प्रमाण–पत्र पर तुम्हीं हस्ताक्षर कर अपनी राज पत्रित अधिकारी की सील लगाओगी।

मम्मी पापा से नमस्ते। सकारात्मक निर्णय सूचित करोगी, ऐसा भरोसा है मंगल शुभकामनाऐं –

शुभाकांक्षी अंकल

दिलीप

दिलीप भटिया, 372/201, न्यूमार्केट, रावतभाटा–323307 मोबाइल नं : 09461591498